कला के लिए पद्मश्री : श्रीमती गुलवर्धन

बैले को समर्पित एक पूरी जीवन यात्रा

समृद्धि शर्मा

पद्मश्री अवार्ड देश के सर्वोच्च प्रतिष्ठित पुरस्कारों में से एक है। यह अवार्ड भारत सरकार द्वारा कला, शिक्षा, उद्योग, साहित्य, विज्ञान, खेल, चिकित्सा एवं समाज सेवा के क्षेत्र में भारतीय नागरिकों को प्रदान किया जाता है। यह गौरव का विषय है कि इस वर्ष यह अवार्ड प्रदेश की तीन अन्य हस्तियों के साथ ही भोपाल की प्रसिद्ध बैले कलाकार गुलवर्धन को भी प्रदान किया गया है।

श्रीमती गुलवर्धन को सम्मानित किया जाना न केवल उनकी कला का सम्मान है बल्कि यह भोपाल और प्रदेश के लिये भी एक गौरव की बात है। इस अवार्ड के साथ ही राज्य में बैले कलाकारों के मन में एक नया उत्साह जगा है।

गुलवर्धन 81 वर्ष की हैं लेकिन इस उम्र में भी उनके मन में इस कला के प्रति वही जज्बा है जो 50 वर्ष पहले हुआ करता था। 19 नवम्बर, 1928 को जन्म लेने वाली गुलवर्धन 16 वर्ष की उम्र से नृत्य नाटिका कर रही हैं। विवाह के बाद उनके पति शांतिवर्धन ने भी उनकी कला प्रतिभा को पहचाना और उन्हें प्रोत्साहित किया। सन् 1944 में इंडियन पीपुल्स थियेटर के अंतर्गत शांतिवर्धन के मार्गदर्शन में नृत्यांगना के रूप में कला जगत में पैर रखने वाली गुलवर्धन ने बैले को खास पहचान प्रदान की है। बैले में कठपुतली का प्रयोग उनकी विधा का नया अंदाज है। कला की यह शैली उन्हीं के खाते में जाती है। उन्होंने अपना पूरा जीवन इस कला को समर्पित कर दिया और आज उम्र के इस पड़ाव पर भी इस कला के लिये उनमें वही जोश कायम है। शारीरिक कमजोरियों ने उन्हें जरा भी हतोत्साहित नहीं किया है।

गुलवर्धन ने 1952 में अपनी कला और बैले को एक स्थान देने के लिये

छाया : शिव कुमार

पति शांतिवर्धन के साथ मिलकर लिटिल बैले ट्रुप की शुरुआत की। इस लिटिल बैले ट्रुप की स्थापना के साथ ही इन्होंने अपनी कला को एक नया आयाम देना शुरू किया। इस बैले ट्रुप की प्रस्तुतियों में भारतीय कला की अन्य विधाओं को शामिल किया जाना एक खासियत रही । कठपुतली कला, आदिवासी नृत्यों को बैले के साथ समाहित किया जाना उनकी कला के प्रति मर्मज्ञता को जाहिर करता है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि बैले के साथ ही भारतीय पारंपरिक लोक परंपराओं की भी उन्हें उतनी ही समझ है।

उन्हें न केवल बैले नृत्य में दक्षता है, बल्कि मुखौटों का बैले में प्रयोग उनकी विलक्षण प्रतिभा को दर्शाता है। कठपुतली शैली में बैले की प्रस्तुति को लेकर उनका मानना है कि बिना चेहरा दिखाये भावों को प्रकट करना ही तो कला है। अभिव्यक्ति की इतनी कठिन शैली को अपनाना किसी सिद्धहस्त कलाकार के बस की ही बात है। उनका मानना है कि अपने काम के प्रति लगन ही सफलता की कुंजी है। कला में प्रयोग के विषय को लेकर वे मानती हैं कि समय के साथ परिवर्तन हर क्षेत्र में होता है, ऐसे में कला इससे अछूती नहीं है।

1952 में स्थापित उनकी संस्था रंगश्री बैले ट्रुप के बैनर तले पहली प्रस्तुति रामायण बैले की हुई जिसे लोगों ने बेहद सराहा। इसमें गुलवर्धन ने राम का चरित्र बखूबी निभाया। इसके बाद तो उनका कला सफर दिनोंदिन आगे बढ़ने लगा। उन्होंने रामायण, पंचतंत्र, सिंहासन बत्तीसी, चक्रव्यूह, संग्राम, भैरवी सहित कई नृत्य नाटिकाओं में अपनी प्रस्तुति देकर उन्हें सार्थक बनाया। इन प्रस्तुतियों के माध्यम से उन्हें न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली। उन्होंने देश-विदेश में विभिन्न नृत्य नाटिकाओं में 1500 से अधिक बार मंचन किया। उनके ट्रुप ने 360 पूरी अवधि के और कई छोटे-छोटे बैले प्रस्तुत किये। इनमें सराइकल्ला चाउ, मयूरभंज चाउ, इंडिया इम्मार्टल, उत्तर प्रियदर्शिनी और महाभारत जैसी प्रस्तुतियां शामिल हैं। इनमें उन्होंने नृत्य निर्देशन भी किया।

1954 में उनके पति शांतिवर्धन के निधन के बाद बैले ट्रुप की जिम्मेदार उन्होंने संभाल ली। इस दौर में उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। विषम परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और अपनी कला को आगे बढ़ाना जारी रखा। भोपाल में 1984 में उन्होंने अपने बैले ट्रुप की स्थापना की और अपनी कला यात्रा जारी रखी। इस समय वे शारीरिक दुर्बलताओं बाद भी अपने ट्रुप की अगली प्रस्तुति के लिये प्रयासरत हैं।

नृत्य नाटिकाओं के प्रदर्शन के अलावा उनमें एक और गुण था। उन्होंने आवारा, धरती के लाल, राही, समाज को बदल डालो, रामराज्य, बंधन और अंजली फिल्म में भी काम किया। उन्हें संगीत नाटक अवार्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है। भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्मश्री अवार्ड से नवाजा जाना कला प्रतिभा का सच्चा सम्मान है।

(लेखिका आकाशवाणी भोपाल के समाचार प्रभाग से संबद्ध हैं।)